Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

सिरमौरी लोक वाद्य एवं प्रयुक्त ताल

DR. DEVRAJ SHARMA

Associate Professor, Govt. Cillege Sangrah, Sirmour

सार संक्षेपिका

शब्द, स्वर, लय और ताल मिलकर संगीत में रस की उत्पत्ति करते हैं। ताल को संगीत की आत्मा कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ताल के बिना गायन एवं नृत्य अधूरा है। जिस प्रकार भाषा के लिए संगीत की आवश्यकता होती है उसी प्रकार संगीत में ताल की आवश्यकता होती है। तालों को वाद्यों पर बजाया जाता है। हर क्षेत्र में प्रयोग किये जाने वाले ताल वाद्य अलग-अलग प्रकार के होते हैं। उनकी बनावट और वादन शैली भी भिन्न-भिन्न होती है। महर्षि भरत और मतंग ने वाद्यों को चार श्रेणियों में बांटा है-तत, घन, सुषिर और अवनद्ध वाद्य। जिला सिरमौर में भी वाद्यों के चार प्रकार है। तत वाद्य के अन्तर्गत इकतारा, सारंगी आदि वाद्य आते हैं। घन वाद्य में करताल, लोटा, बेलुटा, काँसें की थाली आदि शामिल किये जाते हैं। सुषिर वाद्य के अन्तर्गत जिला सिरमौर में बांसुरी, शहनाई, करनाल, रणसिंगा, भायण इत्यादि आते हैं। अवनद्ध वाद्य में दमामा या दमानु, नगाड़ा, हुड़क, ढोल खंजरी, ठाकुली, डमरु इत्यादि शामिल किये जा सकते हैं। उपरोक्त वाद्य स्थानीय कारीगर जिन्हें मिस्त्री कहा जाता है, बनाते हैं। बाँसुरी, बांस की लकड़ी से बनाई जाती है। शहनाई लकड़ी से, रणसिंगा ताँबे से बनाया जाता है। करनाल पीतल से, दमानु, नगाड़ा लोहे से बनाये जाते हैं। हुड़क, ढोल, डमरु, खंजरी ढाकुली इत्यादि वाद्य लकड़ी से बनाये जाते हैं। लेकिन अब इन वाद्यों को बनाने वाले कारीगर नाम मात्र के रह गए है। इसलिए इन वाद्यों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रयास किये जाने चाहिए स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार को सहायता अनुदान राशी प्रदान करनी चाहिए एवं भावी पीढ़ी को प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि पुरानी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जा सके। जिला सिरमौर में किसी वाद्य पर ताल विशेष बजाए जाने के साथ एक प्राचीन परम्परा जुड़ी है। लोक तालों में भले ही शास्त्रीय तालों की जटिल लयकारियां न हो, परन्तु स्थानीय संस्कृति की छाप लोक तालों में स्पष्ट नज़र आती है। सिरमौर क्षेत्र में लोक तालों का प्रयोग जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों में सुना जा सकता है। वाद्य पर ताल बजने से किसी घटना, त्योहार एवं उत्साह का स्पष्ट संकेत मिलता है। सिरमौर जनपद में प्रचलित तालों एवं विभिन्न वाद्यों के प्रयोग की एक प्राचीन परम्परा रही है। लोक वाद्यों पर बजने वाले तालों को हम धार्मिक, ऐतिहासिक और सामाजिक आधार पर वर्णित कर सकते हैं-धार्मिक आयोजनों पर बजने वाली तालों में सन्धुवा, नबद, धूप, देव भण्डारना, बटवार, जागरा, चौघड़ी और पाची आदि शामिल किये जा सकते हैं। ऐतिहासिक घटनाओं एवं सामाजिक तालों के अन्तर्गत निम्नलिखित तालें शामिल की जा सकती हैं-गीह एवं नाटीताल, बुढ़ु ताल, ठोडा ताल, रासे की ताल, फूलणिया, गुगाल की ताल, जंगताल, शवारी ताल आदि। मृत्यु से सम्बंधित तालों में मड़याच, घाई ताल, जड़ी भरत, उदाल उकाल आदि शामिल की जा सकती है।

प्रमुख शब्द-ढाकुली, दमानु, बेलुटा, गीह ताल, ठोडा ताल

भूमिका

लोक संगीत जन-जीवन के उल्लास और उसकी भावनाओं का प्रतीक होता है। लोक संगीत में मानव मन के उल्लास और वेदना का सामंजस्य रहता है। लोक गीत मानव हृदय के सरल भाव है, जिन्हें वह शब्दों और स्वरों के माध्यम से व्यक्त करता है। गीतों में स्वरों के साथ लय की भी आवश्यकता रहती है, जिसके लिए वाद्य की आवश्यकता हुई। फलस्वरूप लोक गीतों में वाद्यों का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। नृत्य और गीत दोनों वाद्यों पर निर्भर होते है। लोक जीवन में आनन्द और उत्साह बढ़ाने में वाद्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शिव का डमरू, कृष्ण की बंसी और विष्णु का शंख कौन नहीं जानता तथापि वाद्यों का प्रयोग लोक संगीत में कालांतर से होता चला आया है। जिला सिरमौर में लोक वाद्यों की प्राचीन परम्परा रही है। विभिन्न अवसरों पर अलग-अलग वाद्यों का प्रयोग एवं कभी-कभी विशेष उत्सवों के अवसर पर संयुक्त रूप से वाद्यों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। इसी प्रकार वाद्यों पर बजाई जाने वाली तालें भी अलग-अलग होती है।। उदाहरण के लिए गीह ताल ढोलक पर, फुलणिया ताल दमानु पर एवं जीणिया ताल ढाकुली वाद्य पर बजाई जाती है। विभिन्न अवसरों पर वाद्यों पर भी अलग-अलग तालों का प्रयोग किया जाता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

साहित्य की समीक्षा

भारतीय शास्त्रकारों के मत में वाद्यों की उत्पत्ति का कारण देवाधिदेव शंकर है। दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करने के पश्चात उद्वेग को शांत करने के लिए भगवान शंकर ने नन्दी, नारद, तुम्बुरु इत्यादि को वाद्य निर्माण के लिए प्रेरणा दी, तत्पश्चात वाद्यों का जन्म हुआ। ''स्वरूप की दृष्टि से भारतीय वाद्यों को चार प्रकारों में विभक्त किया गया है। इन चारों के नाम तत, सुषिर, अवनद्ध और घन है'' (संगीत विशारद पृष्ठ-568)

ज़िला सिरमौर के लोक वाद्यों का इतिहास काफी पुराना है। देवताओं के मन्दिरों में आज भी ये लोक वाद्य सुरक्षित है। इकतारा और सारंगी तत वाद्य के अन्तर्गत आते हैं। इस क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली बाँसुरी, शहनाई, करनाल और रणसिंगा को सुषिर वाद्य में शामिल किये जा सकते हैं। घन वाद्य में करताल, चिमटा, बेलुटा काँसे की थाली इत्यादि सम्मिलित किये जा सकते हैं। ढाकुली, ढोल, ढोलक, डमरु, दमानु, नगाड़ा इत्यादि अवनद्ध वाद्य में शामिल किये जा सकते हैं।

शोध की आवश्यकता

जिला सिरमौर अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए पूरे प्रदेश में अग्रणी माना जाता है। यहाँ की लोक गाथाएँ, हारे, वारे, गंगी, झूरी एवं उनके साथ प्रयोग किए जाने वाले वाद्य हमारी प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा का जीता जागता उदाहरण है। वाद्यों पर बजाई जाने वाली तालें यहाँ के वादकों को कंठस्थ है यदि समय रहते इन वाद्यों का संरक्षण एव तालों को लिपिबद्ध नहीं किया गया तो हमारी भावी पाढ़ी इस समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर से वंचित रह सकती है। अतः वाद्यों का सम्पूर्ण परिचय और उन पर बजाई जाने वाली तालों को लिपिबद्ध करना शोध की नितांन आवश्यकता है।

उद्देश्य:

लोक वाद्यों का सम्पूर्ण परिचय, उनकी बनावट, लोक वादकों द्वारा वाद्यों पर बजाई जाने वाली लोक तालों को लिखित रूप में संरक्षित करना शोध का मुख्य उद्देश्य है।

अनुसंधान क्रिया विधि: शोध पत्र के दत्त संकलन हेतु दो विधि का प्रयोग किया गया है, (1) मुख्य स्त्रोत (Primary Data) - गाँव के प्रबुद्ध वादकों का साक्षात्कार द्वारा दत्त संकलन। गौण/अन्य स्त्रोत (Secondary Data) - विभिन्न पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के अध्ययन द्वारा दत्त संकलन।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

लोक वाद्यों का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता का इतिहास। ''भारतीय संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य के साथ लय ताल सम्बंधी वाद्यों का प्रयोग प्राचीनकाल से होता आ रहा है। उपलब्ध प्राचीन संगीत के इतिहास में इन वाद्यों का प्रयोग हमें कहीं न कहीं देखने को मिलता है। प्राचीन काल के जिन ताल सम्बंधी वाद्यों का उल्लेख मिलता है उनमें आघाती, आदम्बर, भैरी, दर्दुर, ढोल, नगाड़ा मृदंग आदि मुख्य है।'' (ताल परिचय पृष्ठ-17) स्थानीय देवी-देवताओं के साथ वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत भर में लोक संगीत में सुनाई देने वाली रहस्यमय ध्वनियां हस्तनिर्मित वाद्यों की अनूठी व्यवस्था के कारण है। लोक वाद्यों की मधुर ध्वनियां दिल को छू जाती है। जिला सिरमौर भी वाद्यों के चार प्रकारों का वर्णन मिलता है:-

तत्त वाद्य:- जिन वाद्यों में तार द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं वे तत्त वाद्य कहलाते है, सिरमौर में तत वाद्यों का स्थान नगण्य है फिर भी इकतारा और सारंगी वाद्य इस क्षेत्र में यदा-कदा ही देखने को मिलते हैं।

घन वाद्य:- घन वाद्य वे वाद्य होते हैं जिनमें किसी धातु अथवा लकड़ी द्वारा स्वरोत्पत्ति होती है। जिला सिरमौर में धातु से निर्मित वाद्यों में लोटा, बेलुटा, काँसे की थाली और चिमटा आदि शामिल किये जा सकते हैं।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

सुषिर वाद्य:- जिन वाद्यों में स्वरोत्पत्ति वायु द्वारा होती है, उन्हें सुषिर वाद्य कहा जाता है। इस क्षेत्र में बांसुरी, शहनाई, करनाल, रणसिंगा और बीन बाजा आदि वाद्य सुषिर वाद्यों में शमिल किये जा सकते है। इनमें से करनाल और रणसिंगा वाद्यों का निर्माण स्थानीय कारीगरों द्वारा किया जाता है। रणसिंगा ताँबे का बना होता है। तांबे की खोखली मुड़ी हुई नली, जो तीन स्थानों से कटोरीनुमा बनी होती है रणसिंगा कहलाती है माँगलिक कार्यों एवं उत्सवों में इसका प्रयोग किया जाता है। करनाल पीतल का बना होता है। इसकी लम्बाई पाँच-छः फुट की होती है। इसका अगला हिस्सा घेरवदार होता है जिसे छेना कहा जाता है। देव यात्रा एवं उत्सवों, त्योहारों में इस वाद्य का प्रयोग किया जाता है।

अवनद्ध वाद्य:- इन वाद्यों में चमड़े की खाल से बने वाद्य शामिल किये जा सकते हैं, सिरमौर क्षेत्र में दमानु, नगाड़ा, पीतल का ढोल, लकड़ी की ढोलक, खंजरी, ढाकुली, डमरू आदि वाद्य शामिल किये जा सकते हैं लगभग सारे वाद्यों का निर्माण स्थानीय स्तर पर किया जाता है।

दमानु को दमान्टु भी कहा जाता है यह नगाड़े का छोटा रूप होता है। यह लोहे का बनाया जाता है। इसे कसने के लिए चमड़े की डोरी का प्रयोग किया जाता है। इसे जमीन पर रख कर या गले में लटका कर प्रयोग किया जाता है।

नगाड़ा भी लोहे का बना होता है। यह पुराने लोक वाद्यों में से एक माना जाता है। नगाड़ा भी भैंस या गाय की खाल से बना होता है। इसकी पिछली सतह में थोड़ा छिद्र होता है जिसमें घी डाला जाता है और भांग के पत्तों पर उल्टा करके रखा जाता है, इससे सुन्दर गुन्जन पैदा होती है इसे लकड़ी की दो डंडियों से बजाया जाता है।

हुड़क डमरु के आकार का बड़ा वाद्य होता है। यह आम, अखरोट या शीशम की लकड़ी का बना होता है। इसके दोनों सिर बकरे की खाल से मढ़े जाते है। इसे मढ़ने के लिए पतली डोरी का प्रयोग किया जाता है। वादक कलाकार काँधे पर लटकाकर झोल के साथ बजाया जाता है। दमानु और हुड़क वाद्यों का दिवाली एवं लोक उत्सवों पर सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है।

ढाकुली वाद्य बिल्कुल डमरू की तरह होता है। यह भी लकड़ी से बना होता है। इसके दोनों सिरे बकरे की मोटी खाल से मढ़े जाते हैं। इसे पैर पर रखकर दोनों तरफ मुड़ी हुई डंडियों से बजाया जाता है। चैत्त मास में घर-घर जाकर जीणिया गीत के साथ बजाया जाता है।

डमरू वाद्य हुड़क का छोटा प्रकार है। दोनों सिरे बकरे की पतली खाल से मढ़े जाते हैं। एक हाथ में इसे रखकर दूसरे हाथ में छड़ी से बजाते है। इसे भी हाथ से झोल देकर बजाया जाता है। गुगा गाथा में इस वाद्य का प्रयोग किया जाता है।

खंजरी काष्ठ की बनी होती है जिसका घेरा 8 या 10 इंच तक होता है। इसका एक सिरा बकरे की खाल से मढ़ा होता है तथा दूसरा सिरा खाली होता है। इसक बीच में झांझे डाले जाते हैं। गीह और रासा नृत्य में इस वाद्य का प्रयोग किया जाता है। (साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी)

सिरमौरी लोक संगीत में प्रयुक्त ताल परिचय

संगीत रत्नाकर के अनुसार जिसमें गीत, वाद्य और नृत्य प्रतिष्ठित होते हैं, वह ताल है। प्रतिष्ठा का अर्थ है व्यवस्थित करना, आधार देना एवं स्थिरता प्रदान करना।

‘‘काल अदृश्य अनन्त एवं समस्त ब्रह्माण्ड मं व्याप्त है। यह गतिमान है इसलिए सदा आगे की और बढ़ता है। काल के इस आगे बढ़ने की प्रक्रिया से मनुष्य को काल के व्यतीत होने की अनुभूति हुई। इस अनन्त असीम काल को समझने के लिए मानव ने उसे वर्ष, मास, दिन, घण्टा, मिनट एवं सेकंड आदि में विभाजित किया, क्योंकि बिना विभाजन किए काल को समझना असम्भव था।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

इसी प्रकार संगीत में प्रयुक्त होने वाले समय को समझने के लिए 'काल प्रमाण' अथवा ताल की उत्पत्ति हुई।'' (प्राचीन ताल पद्धति, पृष्ठ-63)

सिरमौर जनपद में किसी वाद्य पर ताल विशेष बजाए जाने के साथ एक प्राचीन परम्परा हुड़ी है, जिसे जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों में सुना जा सकता है। वाद्य पर ताल बजने से किसी घटना या त्योहार का स्पष्ट संकेत मिलता है।

धार्मिक आयोजनों पर बजने वाली तालें

सन्धुवा, नबद, धूप, देव भण्डारना, बटवार, जागरा, चौथड़ी, पाची ऐतिहासिक घटनाओं एवं सामाजिक कार्यों से सम्बन्धित तालें:-

गीह ताल, रासा ताल, जंगताल, बधावा ताल, फुलणिया, शवारी ताल आदि।

मृत्यु संस्कार सम्बंधी तालें

घाई ताल, मड़याच, सरगाहरण, जड़ी भरत आदि।

देव सम्बंधी लोक ताल

सन्धुवा ताल:- यह ताल सांयकाल की संध्या बेला में बजाया जाता है। देव पूजा के समय यह ताल दमानु और नगाड़ा वाद्य पर वादक द्वारा दो छड़ियों के साथ बजाया जाता है। यह सात मात्रिक ताल है।

1	2	3	4	5	6	7
घ्ड़ं	गड़	ड़ड़	त्ड़ं	ग	त्ड़ं	ग
x			2		3	

शाम की नबद:- नबद रात को 11 बजे के आस पास और सुबह 4 बजे बजाई जाती है। इसमें तीन मात्रा के छन्द छः बार बजाये जाते है-

धन किड़ किड़, धन किड़ किड़, धन किड़ किड़

धन किड़ किड़, धन किड़ किड़, धन किड़ किड़

इसके बाद छः यात्रिक के बोल बजाए जाते है:-

झिणण झाँ झिं णा झिंणा गिंणा

सुबह की नबद:-

ध्नींग धा धा धा, ध्नींग धा धा,

ध्नींग धाधा, धा धा धा धा, ध्नींग, ध्नींग

ध्नींग ध्नींग, धा धा धा धा

यह ताल चार मात्रिक और तीन मात्रिक के हिसाब से नगाड़ा और दमानु पर बनाई जाती है।

देव भंडारना ताल:- जब देवता किसी के घर जाता है तो यह ताल बजाई जाती है। इसमें कुल 18 मात्राएं होती है।

जिनमें क्रमश: 4, 4, 4, 2, 4 मात्राएं होती है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
धा	क्ड़	धि	ना	ना	ना	कड़	कड़	धा	क्ड़	धि	ना	कड़	कड़	धा	क्ड़	धि	ना
X				0				2				0		3			

जागरा ताल: जागरा ताल जागरण के समय बजाई जाती है ढोल एवं शहनाई के साथ यह ताल बजाया जाता है। यह एक ताल के समान चलन में बजाया जाता है।

झण, झां झां, गिना, झण, झां झां, तिर किट (द्विमात्रिक लय में) (साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी)

ऐतिहासिक घटनाओं एवं सामाजिक कार्यों से सम्बंधित ताल

बधाई ताल:- मांगलिक कार्यों में इस ताल का प्रयोग किया जाता है। यह दमानु और नगाड़े पर संयुक्त रूप से बजाई जाती है। 26 मात्रिक ताल इस प्रकार से बजाई जाती हैः-

तिण तिण तिण तिण झिण झिण झिण झिण

तिण तिण झिण झिण तिण तिण झिण झिण

तिणक झा, कड़ाण तां तिरकिट तिणक झां क्ड़ाण तां तिरकिट

जंगताल:- जंगताल विवाह, बिशु, देवता एवं जातर के अवसर पर बजाई जाती है।

बोल:-झिणझाँ-, झाँ-झिंणण, झिणणझाणिका, झिणणाणा (चतुश्मात्रिक ताल)

गीह ताल:- गीह या नाटी ताल सिरमौर जनपद में बजाई जाने वाली सबसे प्रसिद्ध ताल है। यह ताल ढोलक और खंजरी वाद्यों पर बजाई जाती है। 6 मात्राओं की ताल के बोल इस प्रकार से हैः-

धि	क्ड़	धि	न	धि	धि	न	किड़	धि	धि	न	किड़	धि	न	धिड़,	घिड़
X				2				3				4			

रासा ताल:- रासा ताल रासा नृत्य करते समय दमानु, हुड़क एवं बड़े ढोल पर बजाया जाता है। यह 12 मात्राओं की ताल है।

झिं	झां	ऊँ	झिं	झां	ऊँ	झिं	झां	ऊँ	झिं	झां	णा
X		2			3			4			

मृत्यु संस्कार सम्बंधी तालें

घाई ताल:- जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तब उस समय यह ताल बजाई जाती है जिसके बोल इस प्रकार से है,

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
तां	तां	तां	तां	-	तां	-	तां	तिरकिट	तक	तिरकिटतां	तां	-	

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

मड़याच:-जब शव यात्रा प्रारम्भ होती है तब मड़याच ताल दमानु और नगाड़े पर बजाई जाती है।

1 2 3 4 5 6

धां धां टें टें कड़ कड़

सरगाहरण:- सरगाहरण का शाब्दिक अर्थ स्वर्ग की ओर आरोहरण। जब शव यात्रा आरम्भ होती है तब यह ताल बजाई जाती है।

टणिक, टां, टण टां टण टां (छः मात्रिक)

भविष्य के लिए सुझाव

हमारे लोक वाद्य भारतीय परम्परा की एक धरोहर है। जैसा कि हम जानते हैं कि लोक संगीत से ही शास्त्रीय संगीत की व्युत्पत्ति हुई है। इसलिए इस धरोहर को संरक्षित करना हम सबका कर्तव्य है। आज लोक वाद्यों को भी आधुनिक रूप दिया जा रहा है। चमड़े की खाल की जगह अब प्लास्टिक से बनी पतली चीज़ का प्रयोग किया जा रहा है तथा न अब कोई इन वाद्यों को बनाने वाला मिलता है। इसलिए सरकार को कारीकरों एवं वादकों को सहायता अनुदान राशी प्रदान करनी चाहिए तथा प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि लोक वाद्यों के प्राचीन स्वरूप को सुरक्षित किया जा सके।

निष्कर्ष

लोक वाद्यों की प्राचीन परम्परा एवं आज के सन्दर्भ में इसकी प्रासांगिकता को मध्य नज़र रखते हुए लोक वाद्यों, कारीगरों एवं वादकों को प्रोत्साहित करना अति आवश्यक है। केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों को वाद्यों एवं वादकों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि भावी पीढ़ी इसकी उपयोगिता एवं प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा से लाभान्वित हो सके। शोधार्थी भी इस लोक वाद्यों की परम्परा को शोध के माध्यम से समाज को लाभान्वित कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वसंत, गर्ग लक्ष्मी नारायण (संपादक), संगीत विशारद, पृ. 568
2. श्रीवास्तव गिरीशचन्द्र, ताल परिचय, पृ. 17
3. कुमार अजय डॉ. प्राचीन काल पद्धति, पृ. 63

साक्षात्कार

1. धीमान जोगिन्द्र, गाँव अंधेरी, 15 मई 2021
2. धीमान, दीपराम, गाँव बाऊनल, 25 जुलाई 2022